बदमाशदर्पण ।

अर्थात्

जिस में काशी के बदमाशों की बोलचाल
पर शेरें लिखी हैं जिसे उनकी रीत
रसम, चाल, व्यवहार, और जीविका
झलकती है

जिसे

काशीनिवासी तेग़अली नामक प्रसिद्ध
कवि ने रचा

और जिसे

बाबू रामकृष्णवर्म्मा सम्पादक भारतजीवन
ने प्रकाश किया ।

काशी

भारतजीवन यन्त्रालय में मुद्रित हुआ ।

सन् १९०६ ई० ।

तीसरी बार १०००] [मूल्य ।)॥